International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 383-385

पं. दीनदयाल उपाध्याय और जनसंघ

विक्रान्त शर्मा*

सार

पं० दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे। उन्होंने आजीवन संघ के सवयंसेवक रहते हुए संघ का कार्य किया तथा जन–जन तक संघ के विचार को पहुँचाया। पं० दीनदयाल उपाध्याय का अपना कोई निजी हित या निजी जीवन नहीं था, इसलिए उन्होंने संघ तथा संघ कार्य को ही हमेशा सर्वोपरी रखा। पं० दीनदयाल का जनसंघ में जाना भी संघ के निर्णय से ही हुआ था। पं० दीनदयाल उपाध्याय राजनीति और राजनीतिक जीवन को अच्छा नहीं मानते थे। इसी वजह से वह जनसंघ में भी नहीं जाना चाहते थे। उन्होंने यह इच्छा भी जाहिर की थी कि वह केवल संघ में ही कार्य करेंगे। लेकिन बाद में संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरु जी ने उन्हें जनसंघ में जाने का आग्रह किया और उन्हें समझाया कि यह भी संघ का ही कार्य है तो जनसंघ के कार्य को संघ का ही ध्येयकार्य मानकर उन्होंने जनसंघ में प्रवेश किया तथा जनसंघ के लिए नीति निर्माण तथा उसे ऊँचाईयों पर ले जाने का कार्य किया। उनके मार्गदर्शन में जनसंघ ने उस दौर में बहुत ही अच्छा कार्य किया।

शब्दकोशः *राजनीति, जनसंघ, ध्येयकार्य, विचार।*

प्रस्तावना

पं० दीनदयाल विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उनका जीवन बहुत ही संघर्षपूर्ण रहा लेकिन जीवन की इन बाधाओं तथा संघर्षों का उन्होंने बहुत ही वीरतापूर्वक सामना किया। पं० दीनदयाल पढ़ाई–लिखाई में बहुत ही कुशाग्र बुद्धि थे और जीवन की अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा बहुत ही अच्छे अंकों से पास की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे अपने सहपाठी बालूजी महाशब्दे की प्रेरणा से संघ के सम्पर्क में आए। इनमें देश भक्ति कूट–कूट कर भरी हुई थी तथा संघ को अपने विचारों के अनुकूल मानकर वे संघ के प्रचारक बन गए तथा आजीवन संघ के प्रचारक रहे। श्री गुरु जी के आदेश तथा संघ की योजना से बाद में पं० दीनदयाल जनसंघ में सम्मिलित हुए तथा जनसंघ के महामन्त्री बने। यहाँ से इनका राजनीतिक जीवन प्रारम्भ हुआ तथा उन्होंने जनसंघ को आकार, विस्तार देना प्रारम्भ किया। वे 17 वर्षों तक जनसंघ के महामन्त्री के नाते जनसंघ के संगठनकर्ता व विचारक रहे।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध–पत्र में ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है जिसमें द्वित्यिक स्त्रोतों से सामग्री एकत्रित करके उनकी व्याख्या की गई है।

शोध के उद्देश्य

- पं० दीनदयाल उपाध्याय और जनसंघ के सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- पं० दीनदयाल के जनसंघ में किए कार्यों का वर्णन करना।

---

* शोधार्थी, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश।

विषय

जनसंघ की स्थापना 21 अक्तूबर, 1952 को डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में हुई थी। जनसंघ की नींव रखने से पूर्व डा० मुखर्जी संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरु जी से मिले और राष्ट्रीयता की अवधारणा के सम्बन्ध में दोनों सहमत हो गए तथा उसके बाद "भारतीय जनसंघ" की स्थापना हुई। श्री गुरु जी ने जिन निःस्वार्थी व दृढ़निश्चयी सहयोगियों को नए दल में कार्यभार सम्भालने के लिए श्री मुखर्जी को दिया उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण थे पं० दीनदयाल उपाध्याय। दीनदयाल उपाध्याय का कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं था। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आजीवन प्रचारक रहे। श्री गुरुजी के आग्रहपूर्वक चर्चा के बाद ही उन्होंने जनसंघ के कार्य को संघ का कार्य समझ कर जनसंघ की कमान सम्भाल ली थी। भारतीय जनसंघ का प्रथम अधिवेशन 29, 30 व 31 दिसम्बर, 1952 को कानपुर में हुआ था। इस अधिवेशन में दीनदयाल उपाध्याय को इस नवीन दल का महामन्त्री बनाया गया। यहीं से दीनदयाल उपाध्याय का राजनैतिक जीवन प्रारम्भ हुआ। अपनी वैचारिक क्षमता और बुद्धिमता को उन्होंने प्रथम अधिवेशन में ही प्रकट कर दिया था। इस अधिवेशन में कुल 15 प्रस्ताव पारित हुए जिनमें से सात अकेले दीनदयाल उपाध्याय ने प्रस्तुत किए। डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी पं० दीनदयाल उपाध्याय जी से पहले से परिचित नहीं थे। पं० दीनदयाल उपाध्याय की कार्यकुशलता संगठन कौशल, बुद्धिमता को देखकर वह उनके कायल हो गए थे। उनकी बुद्धिमता को देखकर डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने यहाँ तक कह दिया था कि "यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जाए तो मैं भारतीय राजनीति का नक्शा बदल दूँ"। पं० दीनदयाल उपाध्याय ने 17 वर्षों तक जनसंघ के महामन्त्री के नाते उसके संगठनकर्ता और विचारक के रूप में कार्य किया।

आजादी के बाद भारत कई प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ था तथा देश को किस प्रकार आगे ले जाया जाये यह बहस होना स्वाभाविक था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कांग्रेस का एकतरफा जनाधार होने के कारण वह एक शक्तिशाली राजनैतिक दल के रूप में उभरा। पं० जवाहर लाल नेहरू भारत के प्रधानमंत्री बने तथा डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी उनके मंत्रीमंडल में उद्योगमंत्री बने। जब लियाकत समझौता हुआ तो डॉ० मुखर्जी उसके पक्षधर नहीं थे और उन्होंने मंत्रीमंडल से इस्तीफा दे दिया। तब डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में ही 21 अक्तूबर 1951 को जनसंघ की स्थापना हुई। 23 जून 1953 को डॉ. मुखर्जी की मृत्यु के बाद जनसंघ का नेतृत्व का दारोमदार पूरी तरह से दीनदयाल के कंधों पर आ गया। श्री गुरुजी दीनदयाल और संघ से जनसंघ में गए अन्य कार्यकर्ताओं के प्रेरणास्त्रोत और मार्गदर्शक बने।

जनसंघ के निर्माण से ही उसका उद्देश्य साफ था 'अखण्ड भारत का निर्माण। पं० दीनदयाल के अनुसार अखण्ड भारत देश का भौगोलिक एकता का ही परिचायक नहीं है अपितु जीवन के भारतीय दृष्टिकोण का द्योतक है जो अनेकता में एकता का दर्शन कराता है। जनसंघ की स्थापना के पश्चात ही जनसंघ कश्मीर के भारत विलय में आन्दोलनरत रहा। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने इसी कश्मीर के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए। पं० दीनदयाल ने भी कश्मीर आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। दीनदयाल उपाध्याय जितनी श्रद्धा और भक्ति राष्ट्र के प्रति रखते थे उतनी ही श्रद्धा और भक्ति लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति भी रखते थे। दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्रहित को हमेशा सर्वोपरि रखा। भारत को आजादी दिलाने वाले वीरों से प्रेरणा लेकर ही दीनदयाल राजनीति में आए और जनसंघ को राष्ट्रनीति में कार्य करने वाला राजनीतिक दल बनाया। इसका एक उदाहरण है जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तब जनसंघ द्वारा भारत किसान आन्दोलन चलाया जा रहा था। जैसे ही चीन ने भारत पर आक्रमण किया पं० दीनदयाल ने राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में अपना किसान आन्दोलन बिना किसी शर्त के स्थगित कर दिया। दीनदयाल ने कार्यकर्ताओं की ऐसी फौज तैयार करने पर बल दिया जो अनुशासित तो हो ही साथ में राष्ट्रभक्त भी हो। दीनदयाल ऐसे नेता थे जो राष्ट्रीय संकट के समय पर सभी दलों से एकता दिखाने की अपील करते थे। पं० दीनदयाल के नेतृत्व में जनसंघ ने बहुत उन्नति की।

पं० दीनदयाल ने भारतीय जनसंघ को आकार, विस्तार तथा साथ ही साथ एक विशिष्ट व्यवहार भी दिया। पं० दीनदयाल ने जनसंघ में कार्य करते हुए कई आन्दोलन किए जिसमें सबसे बड़ा आन्दोलन कश्मीर आन्दोलन डा० मुखर्जी की अगुवाई में किया गया। इसके अलावा गोवा मुक्ति आन्दोलन, बेरूबाड़ी हस्तांतरण के

खिलाफ जन अभियान, कच्छ–करार विरोध विराट प्रदर्शन आदि आन्दोलन भी हुए। पं० दीनदयाल ने कई विचार भी दिए उनका मानना था कि समाज का समग्र विकास तभी हो सकता है जब समाज में मिलने वाली सुख सुविधाएं समाज में अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुँचे इसलिए उन्होंने अन्तोदय की अवधारणा भी प्रस्तुत की। उन्होंने एकात्म मानव दर्शन विचार भी दिया। जनसंघ में रहते हुए उन्होंने देश भर का भ्रमण किया जो कि देश भर के कार्यकर्ताओं के लिए उन्हें सुलभ बनाता था। उनके नेतृत्व में जनसंघ का मत प्रतिशत हर चुनाव में बढ़ता ही रहा। सन् 1967 के ऐतिहासिक कालीकट अधिवेशन में पं० दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 29, 30, 31 दिसम्बर को जनसंघ का 14वाँ अधिवेशन पं० दीनदयाल की अध्यक्षता में हुआ। इसके पश्चात् 10 फरवरी 1968 को मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर उनकी हत्या हो गई।

निष्कर्ष

पं० दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय जनसंघ को आकार व विस्तार देने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई वह जनसंघ में बहुत लम्बे समय तक महामन्त्री रहे तथा उनके नेतृत्व में जनसंघ ने नई ऊँचाईयों को छुआ। उनके देश भर के प्रवास ने जनसंघ को घर–घर तक पहुँचने में मदद की। उनकी विलक्षण प्रतिभा और बुद्धिमता का हर कोई कायल था वह श्री गुरु जी के चहेते थे उनकी मृत्यु पर श्री गुरु जी ने रून्धे गले से कहा था "मेरा तो सब कुछ चला गया।" श्री मुखर्जी ने तो पं० दीनदयाल के लिए यहाँ तक कहा था कि अगर "मुझे दो दीनदयाल मिल जाये तो मैं भारतीय राजनीति का नक्शा बदल दूं।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा महेशचन्द्र, (2018) पं० दीनदयाल उपाध्यय, कर्त्तव्य एवं विचार, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन। (पृ० 77, 78)
2. शर्मा महेशचन्द्र, (2016) दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय (पन्द्रह खण्ड), नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन एवं एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान।
3. राव पी० मुरलीधर (2015) पं० दीनदयाल उपाध्याय, भारतीय जनता पार्टी, नई दिल्ली (पृ० 4, 10, 21, 22)

❖◆❖